भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान

जी.टी. रोड, रावतपुर (निकट विकास भवन)

कानपुर-२०८००२ (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष: 0512-2533560, 2554746 **फैक्स**.0512-2533560, zpdicarkanpur@gmail.com, http://atarik.res.in

कृषि विज्ञान केन्द्रों की 26वीं कार्यशाला समापन सत्र दिनांक 09 जुलाई, 2019

स्थानः नरेन्द्र देव कृषि प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

मुख्य अतिथि- श्री सूर्य प्रताप शाही, मंत्री कृषि, कृषि शिक्षा अनुसंधान, उ.प्र. सरकार, लखनऊ
विशिष्ट अतिथि- कुलपति, प्रो.(डॉ.) जे. एस. सन्धू, नरेन्द्र देव कृषि प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या
डॉ. अतर सिंह, निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, कानपुर
डॉ. शान्तनु कुमार दुबे, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप-अटारी, कानपुर
डॉ. नन्द किशोर, निदेशक प्रसार, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा
डॉ. धूम सिंह, निदेशक प्रसार, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर
डॉ. एस.के. सचान, निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ
डॉ. ए.पी. राव, निदेशक प्रसार, नरेन्द्र देव कृषि प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

दिनांक 08-09 जुलाई, 2019 उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की 26वीं कार्यशाला का आयोजन नरेन्द्र देव कृषि प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या में किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही जी, मंत्री , कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ ने अपने सम्बोधन में कहा कि माननीय मुख्यमंत्री के मन में कसक रही है कि प्रधानमंत्री जी द्वारा सन् 2022 तक किसानों की आय दुगनी करने का संकल्प कैसे पूरा हो, इसी उद्देश्य को लेकर कृषि विज्ञान केन्द्रों को बड़ी जिम्मेदारी दी गई। पूर्ववत सरकारों नें कृषि विज्ञान केन्द्रों की ओर उतना ध्यान नही दिया जितना इस सरकार द्वारा दिया जा रहा है। 50 प्रतिशत कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अच्छा काम किया जा रहा है। अन्य केन्द्रों को भी इस पर ध्यान देने की जरूरत है। राज्य सरकार ने सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ बैठकर प्रथम बार चर्चा की कि सन् 2022 तक किसानों की आय दुगनी करने हेतु प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, राष्ट्रीय कृषि विकास योजना, खाद बीज कृषि उपकरण की सहायता किसानों की दी जायेगी।

यह एक पहला राज्य है जहाँ कृषि विज्ञान केन्द्रों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई। यह चिन्ता का विषय है कि कुछ कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रक्षेत्रों पर जमीन खाली पड़ी है। बुवाई नही की गई, उन पर अतिशीघ्र बुवाई की जाये। 8 जनपद अत्यन्त पिछड़े है जहाँ पर विशेष कृषि कल्याण की योजनाएं चलाई जा रही है। सन्

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

2022 तक 1 लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को गाँवों में इस प्रकार कार्य करना होगा जिस प्रकार पूर्व में खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा कार्य किया गया और उन्हे समाज द्वारा सम्मान भी मिला। यदि 20 हेक्टेयर जमीन उपलब्ध हो और 2 हेक्टेयर मे खेती की जा रही हो तो हम किसानों को क्या सन्देश देने जा रहे है, इस पर विचार किया जाना चाहिए। प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र पर एकीकृत फसल प्रणाली, मछली पालन, वर्मीकम्पोस्ट, पशुपालन, बकरीपालन, मशरूम उत्पादन इत्यादि आय जनित इकाईयाँ स्थापित होगी तभी किसानों को प्रेरित किया जा सकेगा। दलहन उत्पादन में अभी हम पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नही हुए है, इसे भी आगे बढ़ाना है। 15 हजार करोड़ रूपये का देश तिलहन को आयात कर रहा है। इस दिशा में भी काम करने की जरूरत है।

एक जनपद, एक उत्पाद का माननीय मुख्यमंत्री का सपना साकार करने की दिशा में आवाहन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि मुजफ्फरनगर जैविक गुड़, सिद्धार्थनगर में काला नमक धान प्रसिद्ध है, इसी प्रकार प्रत्येक जनपद में कुछ न कुछ विशेष उत्पादन होता है। उस उत्पाद की गुणवत्ता उसकी ब्रान्डिग, पैकिंग, ग्रेडिंग, प्रसंस्करण कर अच्छी बाजार व्यवस्था देकर किसानों की आय दुगनी करने का एक सशक्त माध्यम हो सकता है। 8 कृषि विज्ञान केन्द्रों में सीड हब योजना के लिये प्रत्येक केन्द्र को एक करोड़ रूपये का चक्रीय कोष हेतु धनराशि दी गई है। प्रत्येक केन्द्र को 1000 कुन्तल दलहन का बीज तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित है। इस दिशा में कृषि विज्ञान केन्द्र इस अवसर का लाभ उठायें एवं आस-पास के जनपदों में अच्छे बीज की प्रतिस्थापन दर को बढ़ायें। 28 जिलों में फसल अवशेष प्रबन्धन परियोजनाएं दी गई है परन्तु फसलों से अवशेष जलाये जा रहे है। इसका ठीक प्रकार संचालन किया जाना चाहिए। एक देशी गाय प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र को दी जाये जिससे जैविक खेती को बढ़ावा मिल सके। इस वर्ष 1 करोड़ किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड बनाये जाने का प्रदेश सरकार ने लक्ष्य निर्धारित किया है। किसानों को फसली ऋण के अन्तर्गत 1 लाख रूपये तक 5 वर्षों में कोई ब्याज नही देना पड़ेगा। गौशाला प्रबन्धन के अन्तर्गत देशी नस्ल के बछड़ो का बधियाकरण किया जायेगा। माननीय मंत्री जी ने राजस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्रों का इस प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक विजिट कर उनसे सीख लेंगे जिससे यहाँ के कृषि विज्ञान केन्द्रों को गतिशील बनाया जा सके। ऐसा प्रस्ताव शासन ने 22 सितम्बर, 2019 हेतु तैयार किया है।

इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालयों के निदेशक प्रसार द्वारा वर्ष 2018-19 की प्रगति विवरण एवं 2019-20 की कार्ययोजना पर विचार विमर्श किया। इसी कड़ी में डॉ. ए.पी.राव ने बताया कि 83 कृषि विज्ञान केन्द्रों की कार्यशाला में 30 वर्षों बाद कृषि विश्वविद्यालय में प्रदेश के मुख्यमंत्री का आगमन हुआ जिसका समस्त श्रेय माननीय कृषि मंत्री को जाता है। उन्होने बताया कि विश्वविद्यालय के केन्द्रों में 311 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है जिसमें 62 प्रतिशत क्षेत्र में बुवाई हुई है। 1763 कुन्तल बीज तैयार किया है, 1819 इकाईयाँ कृषि विज्ञान केन्द्र मे कार्यरत है। 20 करोड़ रूपये की धनराशि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना उत्तर प्रदेश शासन से प्राप्त हुई है जिसमें 7 नये वाहन क्रय किये गये। डॉ. धूम सिंह, निदेशक प्रसार ने अवगत कराया कि उन्हे 16 करोड़ रूपये राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से प्राप्त हुआ है। इसका काम प्रगति पर है। 6 नये वाहन एवं सोलर एनर्जी का कार्य हो चुका है। उन्होने पूर्व में उपलब्ध कराये गये धन से कृषि विज्ञान केन्द्रों के भवन अब तक बनकर तैयार नही

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

हुए है, इसका उन्हे खेद है। हाथरस, फर्रूखाबाद कृषि विज्ञान केन्द्रों की भवन निर्माण स्थिति अत्यन्त खराब है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों का अन्य कृषितत् सम्बन्धी विभागों के साथ समन्यवय बहुत ही अच्छा है। कृषि विज्ञान केन्द्रों के कर्मियों को 7वाँ वेतनमान, पदोन्नति, पेन्शन आदि प्रकरणों के शीघ्र निराकरण का अनुरोध किया। डॉ. एस.के सचान, निदेशक प्रसार, मेरठ विश्वविद्यालय ने अवगत कराया कि उन्हे 7 नये कृषि विज्ञान केन्द्र मिले है। उनकी स्थापना की सारी तैयारी कर ली गई है। प्रशासनिक भवन इत्यादि बनाये जाने हेतु कार्यदायी संस्थाओं को धनराशि उपलब्ध करा दी गई है। एक जनपद एक उत्पाद के अन्तर्गत जनपद सहारनपुर मे मशरूम उत्पादन, मुजफ्फरनगर में जैविक गुड़, पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बासमती चावल पर विशेष कार्य किया जा रहा है। फसल अवशेष प्रबन्धन की दिशा में भी हम अच्छा काम कर रहे है। डॉ. नन्द किशोर बाजपेई, निदेशक प्रसार, बांदा विश्वविद्यालय ने अवगत कराया कि उनका विश्वविद्यालय सबसे छोटा एवं नया है। 2010 मे इसकी स्थापना हुई है। बुन्देलखण्ड की 126 प्रतिशत फसल सघनता है। 60 लाख पालतू जानवर जिसमें 30 लाख गायें है परन्तु संगठित डेयरी की व्यवस्था न होने से अन्ना प्रथा से कृषि बुरी तरह से प्रभावित है। इस वर्ष दलहन उत्पादन में 6 कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा रिकार्ड औसत उत्पादन दिया गया है। हमीरपुर केवीके ने 25 कुन्तल प्रति हेक्टेयर चना तथा 18 कुन्तल प्रति हेक्टेयर मसूर का उत्पादन दिया है। जालौन कृषि विज्ञान केन्द्र ने मटर की 30 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की बीज उत्पादकता प्राप्त की ।

भाकृअनुप-अटारी, जोन-3 कानपुर के निदेशक, डॉ. अतर सिंह द्वारा जोन-3 की उपलब्धियों पर विस्तार से जानकारी देते हुए अवगत कराया कि कृषि की समस्त योजनाओं से सन् 2022 तक किसानों की आय़ दुगनी करनी है। उत्तर प्रदेश इस मामले में अधिक सौभाग्यशाली है जहाँ भूमि, जल, जलवायु सर्वाधिक अनुकूल है। उन्होने महाराष्ट्र का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ 36 जनपदों में 32 जनपद पानी के संकट से जूझ रहे है। उप महानिदेशक(कृ.प्र.) ने अपने उद्धबोधन में आवाहन किया था कि जीरो बजट , कम लागत वाली तकनीक एक जनपद एक उत्पाद हेतु कृषि विज्ञान केन्द्रों को चिन्हित किया जाये। 83 कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक को यह श्रेय लेने का अवसर मिला है। इस अवसर का कृषि विज्ञान केन्द्र लाभ उठायें और इस लक्ष्य को पूरा करने में जुट जायें।

नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के कुलपति प्रो.(डॉ) जे.एस. सन्धू ने माननीय मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए माननीय मुख्यमंत्री को यहाँ लाने का श्रेय दिया। उन्होने सभी आगन्तुक अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनपद के कृषि विकास में कृषि विज्ञान केन्द्रों की बड़ी भूमिका है। यह प्रदेश प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। यह प्रदेश पूरे विश्व को खाद्यान्न उपलब्ध कराने में सक्षम है, उन्होने आवारा पशुओं के नस्ल सुधार के कार्यक्रम पर विशेष बल दिया। ज्ञान के आदान-प्रदान हेतु विश्वविद्यालय/ कृषि विज्ञान केन्द्र स्तर पर जो भी साहित्य प्रकाशित किया जाये उसे प्रदेश के अन्य संस्थानों को आदान-प्रदान किया जाये। प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र पर 100 किसानों का सम्पूर्ण लेखा-जोखा तैयार कर कार्ययोजना बनाई जाये तथा दुर्लभ फसल प्रजातियों एवं पौधों को संरक्षित कर वह अपने विश्वविद्यालय में जैव विविधता उपवन स्थापित करने की योजना बना रहे है। इसी प्रकार परिसर में दूषित जल को परिष्कृत कर मछलीपालन किया जा रहा है।

अन्त में मुख्य अतिथि द्वारा डॉ सत्य प्रकाश, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र के मेरठ कृषि विश्वविद्यालय में प्रो. के पद पर चयन होने पर सम्मानित किया। तकनीकी सत्र(समूह ए) 33 कृषि विज्ञान केन्द्र जिसमे बांदा एवं

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मेरठ के विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र सम्मलित थे। कृषि विज्ञान केन्द्र मुजफ्फरनगर सर्वोत्तम रिपोर्ट एवं हमीरपुर झाँसी को सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण हेतु पुरस्कृत किया। समूह बी जिसमें सी.एस.ए. एवं आई.सी.ए.आर. के केवीके सम्मलित थे, कृषि विज्ञान केन्द्र कन्नौज को सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण एवं केवीके प्रतापगढ़ को सर्वोत्तम रिपोर्ट हेतु पुरस्कृत किया। समूह सी मे एन.डी. विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्र शामिल थे, सर्वोत्तम रिपोर्ट हेतु केवीके अयोध्या एवं सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण हेतु केवीके गोरखपुर प्रथम को पुरस्कृत किया गया। इसी श्रंखला में माननीय मुख्य अतिथि द्वारा डॉ अतर सिंह, निदेशक, भाकृअनुप-अटारी, कानपुर, डॉ. सी.एम. सिंह, डॉ. ओ.पी. सिंह, पूर्व निदेशक सभी निदेशक प्रसारगणों को मुख्य अतिथि द्वारा अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। कुलपति, नरेन्द्र देव कृषि प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, द्वारा मुख्य अतिथि को शाल, स्मृति चिन्ह एवं राम दरबार द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित पत्रिका का विमोचन किया गया।

अन्त में डॉ. शान्तनु कुमार दुबे द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथिगणों एवं अन्य आमंत्रित अतिथिगणों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रतिभागियों, मीडिया के सहयोगियों एवं कार्यशाला को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी साथियों को धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। साथ ही कार्यशाला के उत्कृष्ट सफलता हेतु आयोजकों को विशेष रूप से धन्यवाद देते हुए कार्यशाला के समापन की घोषणा की ।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर